# गुजरात के किसानों का बीटी कपास से मोहभंग

**भारत डोगरा**

बीटी कपास नामक जीन परिवर्तित फसल बहुत विवादास्पद रही है और अनेक क्षेत्रों में इससे किसानों की बहुत क्षति होने के समाचार मिले हैं। पर जब भी इस क्षति की चर्चा होती थी तो बीटी कपास के समर्थक यह उत्तर देते थे कि गुजरात को देखिए, वहां तो बीटी कपास बहुत सफल है। अनेक वर्षों तक गुजरात को बीटी कपास की सफलता के क्षेत्र के रूप में प्रचारित किया गया, पर अब यहां के किसानों का भी बीटी कपास से मोहभंग होने लगा है।

उत्तर गुजरात में साबरकांठा ज़िला बीटी कपास के एक बड़े केंद्र के रूप में प्रचारित हुआ है। यहां बीटी कपास उगाने के साथ इसके बीज उत्पादन का कार्य भी बड़े पैमाने पर होता है। पर अब यहां के अनेक किसान इस फसल से निराश होने लगे हैं। हाल ही में यहां के एक बड़े गांव खेदब्रह्मा में किसानों के एक समूह से बातचीत हुई। इन किसानों ने बताया कि आज से कुछ वर्ष पहले इस गांव के लगभग 80 प्रतिशत किसान बीटी कपास उगाते थे, पर अब केवल 15-20 प्रतिशत किसान ही कपास की इस किस्म को उगाते हैं।

इतने अधिक किसानों ने हाल के समय में इस फसल को क्यों छोड़ दिया, इसके बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि आरंभिक वर्षों में तो अच्छे परिणाम मिले, पर उसके बाद बीटी कपास की फसल में कई समस्याएं आने लगीं व कई तरह के उपचार करने के बाद भी इन समस्याओं का समाधान नहीं हो सका। इस तरह के महंगे उपचारों में जब किसानों का बहुत पैसा बर्बाद होने लगा तब किसानों ने बीटी कपास से मुंह फेरना आरंभ कर दिया।

यह प्रवृत्ति केवल कुछ गांवों तक सीमित नहीं है, इसका पता *इकॉनॉमिक टाइम्स* में कुछ समय पहले प्रकाशित एक रिपोर्ट से लगता है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि गुजरात में मानसून की प्रगति ठीक न रहने वाले वर्षों में बीटी कपास में मिली बग कीड़े का प्रकोप बहुत बढ़ गया है। इस क्षति के बाद किसानों ने बीटी कपास को बड़े पैमाने पर छोड़ा और कपास के अन्य बीज खरीदने लगे। बोलवार्म कीड़े का प्रकोप भी बढ़ा है। इस रिपोर्ट में कुछ किसानों ने यह भी कहा है कि दीर्घकालीन दृष्टिकोण से देखा जाए तो बीटी कपास उगाने का भूमि के उपजाऊपन पर प्रतिकूल असर पड़ता है और किसान को अत्यधिक क्षति होती है।

*इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली* में प्रकाशित अनुसंधान पत्र में कविता कुरंगति ने विश्व के अनेक क्षेत्रों में बीटी कपास की उत्पादकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इस सम्बंध में गुजरात के कुछ वर्षों के आंकड़ों का अध्ययन करते हुए उन्होंने बताया है कि पहली नज़र में तो ये आंकड़े प्रभावशाली लगते हैं, पर अधिक विस्तृत जांच से कुछ अन्य तथ्य सामने आते हैं।

एक मुद्दा तो यह है कि आरंभ और अंत में कौन-सा वर्ष लेकर तुलना करते हैं। यदि आरंभ में आय कम या अनिश्चित वर्षा वाला वर्ष लेते हैं व अंत में संतोषजनक वर्ष लेते हैं तो उत्पादकता बढ़ी हुई ही नज़र आएगी जिसमें काफी असर किसी फसल की किस्म का नहीं है अपितु बेहतर वर्षा का है। इस दौरान सिंचाई व जल संरक्षण में प्रगति हुई व उसका असर भी इन आंकड़ों में शामिल है। सरकारी तंत्र ने बीटी कपास को सिंचाई व अन्य बेहतर सुविधाएं विशेष तौर पर उपलब्ध करवाकर इसकी सफलता की संभावनाएं बढ़ाईं। जिन वर्षों के आंकड़े ज़्यादा प्रचारित किए गए हैं, वे काफी

अच्छी वर्षा के वर्ष थे व कई अधिकारी भी स्वीकार करते हैं इस बढ़ी हुई उत्पादकता के आंकड़ों में काफी हद तक तो मौसम की अनुकूलता का ही योगदान है।

दूसरी ओर, कुछ वर्षों के अच्छे मानसून के बाद जब मानसून की प्रगति ठीक नहीं रही तो बीटी कपास का उत्पादन ठीक न होने व अनेक किसानों द्वारा गुजरात में बीटी कपास की खेती छोड़ देने के उदाहरण मिले हैं।

गुजरात में बीटी कपास की खेती व बीज उत्पादन का एक अत्यंत चिंताजनक पक्ष यह रहा कि इसमें बाल मज़दूरों का बड़े पैमाने पर उपयोग हुआ। इन बाल मज़दूरों को बहुत हानिकारक कीटनाशक दवाइयों के संपर्क में आने वाले काम करने पड़े। बीटी कपास जैसी जीएम फसल पर उनका काम करना तो वैसे भी उनके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक था, जिस पर कीटनाशक व अन्य ज़हरीली दवाइयों से संपर्क ने यह संभावना और बढ़ा दी। कुछ बाल मज़दूरों की मौत के समाचार भी मिले हैं। स्थानीय समाचार पत्रों ने ऐसे दर्दनाक समाचार प्रकाशित किए हैं कि कुछ बाल मज़दूरों को रात को जंज़ीर से बांधकर रखा गया ताकि वे भाग न जाएं। इस बाल मज़दूरी के विरुद्ध अभियान चलने के बाद ही अब इसमें कुछ कमी आई है। ***(स्रोत फीचर्स)***